IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी : स्त्री विमर्श

डॉ. व्ही. आई. शेख
हिन्दी विभागाध्यक्ष
किटेल कला महाविद्यालय,
धारवाड – कर्नाटक

इक्कीसवीं सदी का साहित्य शोध की माँग करता है । पहला दशक बीत चुका है, अभी नौ दशक आने बाकी हैं पता नहीं आगे साहित्य कहाँ तक पहुँच जाएगा । इस नयी सदी में नएपन को लिए हुए कई साहित्यकार आरहे हैं पुराने साहित्यकार आगे बढ़ रहे हैं जो दो सदियों को देख रहे हैं । नए साँचे में अपने आप को ढाल रहे हैं । आज 'उ' युग है तकनीकी क्षेत्र में बदलाव आ रहा है सहज ही इसका प्रभाव साहित्य पर परिलक्षित होता है ।

सदियों से ही नारी पुरुष की प्रेरक शक्ति के रूप में उसकी अनुगामिनी बनी रही है । निरंतर उसका साथ देती आ रही है। समय के साथ उसकी स्थिति में परिवर्तन आता गाया वह दासी से होते होते मालकिन भी बनी लेकिन आज के दौर की स्त्री के लिए सभी मार्ग खुले हैं वह बिसवीं सदी की अपेक्षा मुखर हो उठी है, फिर भी कहीं न कहीं परछाई की तरह दुःख एवं समस्याएँ उसका पीछा करते हुए इस सदी में भी पहुँच गए हैं । इस सदी की कथाएँ, समस्याएँ सामन्य ही क्यों न हों वे २१ वीं सदी के होने के कारण विशेष बन जाते हैं जैसे हर दिन वही होता है फिर भी दिसबर ३१ के बाद का आने वाला दिन विशेष लगता है उमंगे, सपने जगाता है क्योंकि वह नया साल होता है। यहाँ तो नई सदी है। फिर भी स्त्री यहाँ पर भी अपनी अस्मिता, अस्तित्व, वर्चस्व की तलाश करती हुयी एवं चुनौतियों का सामना करती हुई पायी जाती है ।

विशेष कर नारी द्वारा लिखा गया साहित्य और नारी के लिए लिखा गया साहित्य नारी विमर्श है । २१ वीं सदी के प्रथम दशक में हिन्दी साहित्य की हर विधा में नारी विमर्श देखने को मिलता है । महिला संबंधी महिला लेखन विशेष होता है क्योंकि एक नारी ही नारी जीवन को पूर्णतः समझ सकती है और उसे अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकती है क्योंकि मीरा ने भी यही कहा था "घायल की गति घायल ही जाने और न जाने कोय।" इसमें अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता हम पा सकते हैं । इस सदी में भी नारी के बदलते रूप को लेकर सशक्त लेखन हुआ है, हो रहा है । उसी में से कुछ स्त्री संबंधी कहानियों का उल्लेख में यहाँ करने जा रहा हूँ ।

२१वीं सदी में लिखनेवाली कई लेखिकाएँ हैं जैसे ट्टमन्नु भण्डारी, ममता कालियाँ, सुधा अरोडा, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल, शशीप्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग, मेहरून्निसा परवेज, दीप्ति खण्डेलवाला, सुनीता जैन, इन्दु जैन, निरूपमा सेवती, उशा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, रजनी पन्नीकर, चन्द्रकान्ता, मालती जोशी, शिवानी आदि ।

सुधा अरोडा ने कुछ कहानियाँ लिखीं जो प्रभावशाली हैं जिसमें चारदिवारी के अन्दर की और बाहर की कथा है । स्त्री के विविध समाज के प्रतिनिधि रूप यहाँ देखने को मिलते हैं । युद्ध विराम, महानगर की मौथिली, बगर तराशे हुए, कमजोर और रहोगी तु वही, उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं । इस्पात, युद्ध विराम, खलनायक, तानाशाही आदि उनकी बहुचर्चित कहानियाँ है । 'रहोगी तुम वही' सुधा अरोडा की २००७ में प्रकाशित कहानी संग्रह है जिसमें १६ कहनियाँ हैं अधिकांश कहानियों में स्त्री की संवेदना, संत्रास, यातना, दुःख संघर्ष आदि का चित्रण है। तेरहवें माले से जिन्दगी, काँसे का गिलास, जानकीनामा आदि कहानियों में मध्यवर्गिय नारी जीवन की विडम्बनाओं और कुरूपताओं को दर्शाया गया है ।

सामान्यतः जो क्षेत्र स्त्रियों के लिए नहीं होते थे उन क्षेत्रो में भी आज स्त्री आगे निकल चुकी है । आज कल होटेल मेनेजमेंट का कोर्स पूर्ण कर अनेक युवतियाँ होटेलों में कार्यरत है क्योंकि इनकी 'गए वक्त का मुहावरा' कहानी की अनुश्री परंपरागत स्त्रीयों से हटकर होटेल मयूर में सीनियर मेनेजर के रूप में कार्यरत है । नारी प्राचीन रूढियों और परम्पराओं के प्रति विद्रोहात्मक स्वर अपना रही है । वह अज जड वस्तु की तरह निर्जीव सी होकर रहना नहीं चाहती। एक स्थान पर चित्रा मुदगल कहती है । "औरत बोनसाया का पौधा नहीं है, जब जी चाहा उसकी जडें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया । वह बौना बनाए रखने की इस साजिश का अस्वीकार भी तो कर सकती है।"[४] आज स्त्री की सोच में उदारीकरण, जागतीकरण स्थान ले रहे हैं । उसकी मानसिकता बदल रही है । उसके प्रयास सफल हो रहे है ।

काम काजी स्त्री यों में बी कुछ बदलाव हम देख सकते हैं क्योंकि वे आर्थिक दृष्टे से निर्भर हैं । इनकी 'गए वक्त का मुहावरा' कहानी की मिसेस मेहता नौकरी करती है । आर्थिक स्वावलम्बन के बल पर वह पति के अत्याचारों को पहले की नारी की तरह सहन नहीं करती बल्कि पति के अन्याय के विरुद्ध चीख उठती है विद्रोह करती है । वह कहती है 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझ पर हाथ उठाने की मैं तुम पर कोर्ट केस करूंगी । मुझे क्या गुलाम समझ रखा है? बीस हजार कमाकर लाती हूँ । घर–बाहर खटती हूँ, तुम मुझ पर तोहमत लगाओगे ।"[५] यहाँ पर नायिका परंपरागत सोच को बदलती है ।

मृदुला गर्ग ने भी स्त्री विमर्श से जुडी हुई कहानियों को लिखा है इनका हरी बिंदी कहानी संग्रह २००४ में प्रकाशित हुआ । जिसमें अठारह कहानियाँ संग्रहित हैं । जिनमें नारी के विविध रूप देखने को मिलते हैं । 'हरी बिंदी कहानी नायिका प्रधान है जिसमें दाम्पत्य जीवन की एक रसता से ऊबी हुई नायिका पति के दूसरे शहर जाने पर पति के वियोग में दुःख न मनाते हुए मुक्ति का आनन्द उठाना चाहती है । वह पूरा दिन अपनी इच्छा से व्यतित करना चाहती है । वह देर तक सोती है, लाल बिन्दी के स्थान पर हरी बिंदी लगाती है, अकेली फिल्म जाकर पडोस में बैठे पुरुष से बातें करती है । उसके साथ होटेल जाती है । इनकी और एक कहानी 'एक और विवाह" में पाश्चात्य प्रभाव लक्षित होता है । इसकी नायिका कोमल

के विचार अत्याधुनिक है । वह स्वच्छन्द प्रवृत्ति की है । उसे विवाह बन्धन में विश्वास नहीं, उसकी दृष्टि में रोमांस ही जीवन में महत्वपूर्ण है, विवाह, रोमान्स का अन्त मानती है । इसकी सहेली रानी का भी विचार कुछ इसी तरह का है वह मानती है सन्तान प्राप्ति के लिए विवाह आवश्यक नहीं है । मृदुला गर्ग ने कोमल और रानी के माध्यम से अत्याधुनिक, विदेशी संस्कृति से प्रभावित नारियों की सोच को प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षतः मृदुला गर्ग के हरि बिंदी' कहानी संग्रह की कहानियों में प्रेम, मनोवैज्ञानिकता, स्वच्छन्द मनोवृत्ति विद्रोह मातृत्व आदि विविध पहलुओं का चित्रण है । पति और प्रेमी के बीच उलझी मनोवृत्तियों को उभारा है । उनके सभी नारी पात्र यथार्थवादी हैं इसलिए उनके व्यवहार में किसी प्रकार का संकोच नहीं है । वे जीवन में स्वच्छंदता का स्वीकार करती हैं।

इनके अलावा मालती जोशी के औरत एक रात है (२००१) अपने आँगन की छाँव (२००३) रहिमन धागा प्रेम का (२००४) वो तेरा घर वो मेरा घर (२००६) मधु कंकरिया के बीतते हुए (२००४) भरी दोपहरी के अंधेरे (२००७) अंत में ईशु (२००८) कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । जो २१वीं सदी के प्रसिद्ध कहानी संग्रह है ।

निष्कर्ष :– नारी जीवन की त्रासदी जन्म से ही आरंभ होती है लडकी जन्म लेने पर जलेबी बाँटी जाती है वहीं बेटा जन्मा तो महंगा पेढा बाँटा जाता है । विडंबना ये है बेटा पेढा तो बंटवाता है आगे जलेबी भी नहीं खिलाता । मैं चाहता हूँ ट्ट कोई ये शुरुआत तो करे कि बेटी जन्मी हो पेढे बट रहे हों । वास्तव में इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में नारी ने अपने व्यक्तित्व, और अस्मिता को पहचान है । इसलिए वह अत्याचार, अन्याय को सहन न करते हुए उसका विरोध करती है । यह विद्रोहात्मक रूप ही उसकी 'ऐडन्टिटी' बनती जा रही है । उसका विद्रोह, विरोध, घर–बार परिवार को तोडने के लिए नहीं है बल्कि नारी को दासता से मुक्त करने का प्रामाणिक प्रयास भर है ।